स्टैण्ड विद डिगनिटी

standwithdignity.org मानवता, प्रेम, श्रद्धा, विश्वास, बलिदान, त्याग और इंसाफ़, पर आधारित यह अभियान इतिहास के अब तक के सबसे बड़े आन्दोलन ''कर्बला'' से प्ररित है।

हमारे सवाल जो आपके हृदय को झकझोर देंगे:

हम किस लिये इस दुनिया में आये हैं?
हम किन मान्यताओं के लिये प्रसायरत रहेंगे?
कितनी बार हमारे दिल में किसी के लिये दया का भाव आया है?

आज के दौर में बहुत मुश्किल है, एक ऐसे इंसान को ढूंढ पाना जो आत्मसम्मान बहादुरी और स्वाभिमान की मूरत हो।

चौदह सौ वर्ष पूर्व एक इंसान अपने समय के इतिहास के सबसे बड़े क्रूर और अधर्मी शासक के विरुद्ध खड़ा हुआ, जिसने उसके तानाशाही रवय्यों को ललकारते हुये एक आन्दोलन की शुरुआत की जो आज तक जारी है।

वह इंसान **इमाम हुसैन अ०स० थे।**

क्या आप जानते हैं?

14 दिसम्बर 2014 को शहीदों के चेहल्लुम/अरबईन के अवसर पर लगभग 2 करोड़ श्रद्धालुओं ने कर्बला (ईराक़) जाकर इमाम हुसैन को श्रद्धान्जली अर्पित की। यह इतिहास के अब तक के सबसे बड़े शांतिपूर्ण जनसमूह में से एक है।

अमेरिकी राष्ट्रपति **बराक हुसैन ओबामा** ने कहा ''मैने डा० मार्टिन लूथर किंग जूनियर से सीखा जिन्होंने कहा था मैंने **महात्मा गांधी** से सीखा जिन्होने कहा था मैंने मोहम्मद साहब के नवासे इमाम हुसैन से सीखा कि किस तरह ज़ुल्म और दमनकारी नीतियों को बर्दाश्त करते हुये तथा सच्चाई के रास्ते पर चलते हुये जीत हासिल की जा सकती है।''

महात्मा गांधी का पहला नमक सत्याग्रह इमाम हुसैन के यज़ीद के ख़िलाफ़ छेड़े गये अहिंसात्मक आनदोलन से प्रेरित है।

standwithdignity.org

1400 वर्ष पूर्व
एक इंसान ने एक
लौ जलाई जो आजतक हर एक
इंसान के दिल में रौशनी फैला रही है

इमाम हुसैन
और उनके संदेश को जानने के लिये

विश्वास स्वाभिमान स्नेह

देखें
standwithdignity.org

sponsored by Muslims for Peace, Inc.

कर्बला की घटना

10 अक्टूबर, 680 ई०

(इतिहास)

सन् ६६१ ई० में बनी उमय्या ख़ानदान के शासक मुआविया ने इमाम हसन (पैग़म्बर मोहम्मद साहब के बड़े नवासे/नाती) से सुलह सन्धि की मगर शर्त थी कि मुआविया के निधन के बाद उत्तराधिकार इमाम हसन के भाई इमाम हुसैन को मिलेगी। इमाम हसन को धोखे से क़त्ल करके मुआविया ने सन्धि तोड़ दी और अपने बेटे यज़ीद को उत्तराधिकारी नियुक्त किया।यज़ीद एक बेहद क्रूर और ज़ालिम शासक था जो खुलेआम अमानवीय कार्य करके मानवता को तार तार कर रहा था।इमाम हुसैन ने यज़ीद के आतंकी शासन (जिसपर इस्लाम का मुखौटा था) उसे बेनक़ाब करने और उसका विरोध करना अपना फ़र्ज़ समझा। अपना घर मदीना छोड़कर इंसानियत को बचाने के लिये अपने परिवार (महिलाओं एंव बच्चों) के साथ निकल पड़े। यज़ीदी सेना ने इमाम हुसैन को रास्ते में रोक लिया और कर्बला की तरफ़ ले गये जहां जंग हुई।

beke हुसैन	यज़ीद
परिवार सहित सिर्फ़ 72 साथी	30,000 से भी ज़्यादा हथियारबन्द फ़ौज

बलिदान की प्रेरणाः

विश्वास, वफ़ादारी, स्वाभिमान, नितिपरायणता, स्नेह, मानवता, वीरता	लालच, दोहरापन, बदले की भावना, पद लौलुप्ता,रिश्वतख़ोरी, अज्ञानता, पाप, कायरता,

इमाम हुसैन और उनके वफ़ादार साथियों ने इंसानियत को बचाने में अपना बलिदान दिया। उनके परिवार की महिलायें एंव उनके बच्चे यज़ीद द्वारा बन्दी बना लिये गये।

इमाम हुसैन के परिवार की महिलाओं ने बन्दी होने के पश्चात लोगों के बीच प्रभावशाली उपदेश देते हुये यज़ीद के अत्याचारों और दोहरेपन का खण्डन किया। जिसके फलस्वरूप यज़ीद का शासन जो विश्व के तीन चौथाई हिस्से पर था, वह मात्र दमिश्क़ (सीरिया) तक ही सीमित होकर रह गया, बाक़ी प्रान्तो के गवर्नरो ने यज़ीद से नाता तोड़ लिया और अपने स्वयं अमीर (शासक) होने का एलान कर दिया अर्थात् वह (यज़ीद) बदनाम हुआ और उसके क्रूर शासन का अन्त हुआ।

कर्बला से मिलने वाली शिक्षा

मानवता के आज तक के इतिहास में किसी भी जंग ने न तो इतनी ज़्यादा सहानूभूति व सराहना पाई और न ही शिक्षा दी है, जितनी कर्बला की जंग में हुसैन की शहादत ने।(एन्टोनी बारा लेबनानी, इसाई शिक्षाविद)

स्वाभिमान

मुझ जैसा यज़ीद जैसे का समर्थन(बैयत) नहीं कर सकता।(इमाम हुसैन) ज़िल्लत की ज़िन्दगी से इज़्ज़त की मौत बेहतर है।(इमाम हुसैन)

विश्वास

"कर्बला के वाक़ये से हमें यह सबक़ मिलता है कि इमाम हुसैन उनके घरवाले और उनके साथी अल्लाह पर अटूट विश्वास रखते थे उन्होंने दिखा दिया कि जब सच्चाई और इंसाफ़ के लिये लड़ाई हो तब एक आदमी भी हज़ारों पर जीत पा सकता है।" (थॉम्स कारलायल, स्काटिश इतिहासकार)

स्नेह

इमाम हुसैन ने जो हासिल किया वह कोई और हासिल न कर सका।(कवि नूरी सरदार)

आज़ादी

इमाम हुसैन का बलिदान आध्यात्मिक उदारवाद को दर्शाता है इंसाफ़ और सच्चाई को जीवित रखने के लिये बिना किसी फ़ौज या हथियारों के, बलिदान से भी सफ़लता पाई जा सकती है। ठीक उसी तरह जैसे इमाम हुसैन ने किया।(रवीन्द्र नाथ टैगोर)

विजय

मैंने हुसैन से बढ़कर कोई शहीद नहीं देखा और हुसैन की शहादत से ज़्यादा किसी शहीद की क़ुर्बानी का असर नहीं हुआ। (स्वामी प्रथम शंकराचार्य)

मानवता के लिए दी गयी क़ुर्बानी

धार्मिक ग्रन्थों, हिन्दू देवताओं, अवतारों, साधु सन्तों, विद्वान एंव महापुरूषों, प्रसिद्ध लेखकों, महाकवियों के अतिरिक्त राजा महाराजाओं, सूफ़ी सन्तों, हुसैनी ब्रहामणों, का इमाम हुसैन से प्रेम और श्रद्धा इसके अतिरिक्त कर्बला के युद्ध में हिन्दू सेना का इराक़ पहुंचना, बलिदान देना, इमाम हुसैन का हिन्दुस्तान आने की इच्छा व्यक्त करना, भारत में इमाम हुसैन की शहादत का समाचार आना, हिन्दू राजाओं व जनता द्वारा शोक मनाना, कर्बला के महान त्याग और बलिदान की ओर इशारा करता है। मानवता के लिए दी गयी इस क़ुर्बानी की गूंज आज भी हर इंसान को अपनी ओर आकर्षित कर रही है। जहां से प्यार - मोहब्बत, भाई चारगी और विश्व-शान्ती का पैग़ाम बिना किसी स्वार्थ और भेद भाव के दिया जा रहा है ।

इमाम हुसैन का बलिदान किसी एक देश या राष्ट्र तक सीमित नहीं है बल्कि मानवता की पीढ़ियों के लिये है। (डॉ० राजेन्द्र प्रसाद)

इमाम हुसैन का बलिदान हर एक वर्ग और समुदाय के लिये है जो नितिपरायणता का जीवन्त उदाहरण है। (प० जवाहर लाल नेहरू)

यदपि इमाम हुसैन को बलिदान दिये हुये कई सौ साल हो चुके हैं परन्तु उनकी अविनाशी आत्मा आज तक लोगों के हृदय में राज करती है। (डॉ राधा कृष्णन)

ऐ हुसैन तू बड़ा जवां मर्द था तूने मौक़े की नज़ाकत को ख़ूब समझा अपने अज़ीज़ों की जान देकर सिर्फ़ इस्लाम ही नहीं बल्कि इंसानियत की लाज रख ली।(मुंशी प्रेमचंद)

मोहर्रम और अज़ादारी, कर्बला के शहीदों को श्रद्धांजली और इमाम हुसैन की मान्यताओं, शिक्षा और आदर्शों का प्रचार प्रसार है। उसके साथ-साथ, ज़ुल्म, अन्याय और आतंक जैसी चीज़ों के ख़िलाफ़ आन्दोलन भी है।